कृषि विज्ञान केन्द्र बरेली द्वारा कृषक उत्पादक संगठन के पदाधिकारियों के लिये फसल अवशेष प्रबन्धन कार्यशाला का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली द्वारा कृषक उत्पादक संगठन के पदाधिकारियों के लिये आज दिनाँक 06 नवम्बर, 2020 को फसल अवशेष प्रबन्धन विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि श्री धर्मेन्द्र मिश्रा, डी॰जी॰एम॰, नाबार्ड थे। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि यह एक बहुत अच्छा अवसर है जब कृषक उत्पादक संगठन के गठन के बाद आपको फसल अवशेष प्रबन्धन यन्त्रों कि खरीद कर उन्हें कृषकों के खेतों पर प्रयोग करने के रूप में एक बड़ी जिम्मेदारी मिली है इससे आपके संगठन को लोकप्रियता तो मिलेगी ही साथ ही इन यन्त्रों को किराये पर चलाने से संगठन को आय भी प्राप्त होगी। डॉ॰ राज करन सिंह, अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र ने सभी पदाधिकारियों को एक बेहतर तथा सफल कृषक उत्पादक संगठन बनने के गुर बताये साथ ही ये संगठन किस प्रकार से अपने सदस्यों तथा उनके परिवारों को कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित रोजगारपरक प्रशिक्षणों का लाभ दिलाकर उनके द्वारा उत्पादित सामग्री को कृषक उत्पादक संगठन के माध्यम से बेहतर बाजार उपलब्ध करा सकते हैं, इस सम्बन्ध में जानकारी दी। श्री राकेश पाण्डे, विषय वस्तु विशेषज्ञ कृषि विज्ञान केन्द्र ने फसल अवशेषों से मृदा उत्पादकता तथा पर्यावरण को होने वाली क्षति के बारे में जानकारी देते हुये सुपर एस॰एम॰एस॰ युक्त कम्बाइन के प्रयोग, हैप्पी सीडर, जीरो टिल फर्टी सीड ड्रिल, श्रब मास्टर/चॉपर कम श्रेडर/मल्चर, रोटावेटर, बेलर, हे-रेक, रिवर्सिबल मोल्ड बोर्ड प्लाऊ, रीपर कम बाइंडर आदि यन्त्रों, किस परिस्थिति में कौन सा यन्त्र प्रयोग किया जाना है तथा यन्त्रो के प्रयोग के समय बेहतर परिणाम के लिये क्या-क्या सावधानियाँ रखनी है, इस सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी प्रदान की। उन्होंने संगठन के पदाधिकारियों की यन्त्रों के प्रयोग के सम्बन्ध में आ रही समस्याओं का निराकरण भी किया। कृषक उत्पादक संगठन के पदाधिकारियों ने कृषि विज्ञान केन्द्र की गृहविज्ञान प्रयोगशाला का भ्रमण भी किया जहाँ उन्होंने ग्रामीण महिलाओं द्वारा बनाये गये उत्पादों में अत्यधिक रुचि दिखायी। कार्यशाला में आठ कृषक उत्पादक संगठन के 15 पदाधिकारियों ने सहभागिता की।

कृषकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम
फसल अवशेष प्रबन्धन
कृषि विज्ञान केन्द्र